८. अलंकार प्रथम

कुल अंक :- ७०० क्रियात्मक :- ५०० मंच प्रदर्शन : १०० लिखित शास्त्र : १००

* **क्रियात्मक :**

१. शुद्ध नृत पक्ष	- २५०
२. अभिनय पक्ष	- १५०
३. अंग शुद्धि	- २०
४. वेशभूषा	- २०
५. प्रस्तुति प्रभाव	- २०
६. मौखिक शास्त्र (पढन्त सहित)	- ३०
७. परीक्षक द्वारा दिये गये प्रसंग को तुरंत प्रस्तुत करना कोई भी कथा या प्रसंग को लेकर (अभिनयपक्ष)	- १०

मंच प्रदर्शन के अंको का वर्गीकरण

१. लय, ताल	- २०
२. अभिनय क्षमता	- २०
३. अंग शुद्धि	- १५
४. वेशभूषा	- २०
५. प्रस्तुति प्रभाव	- २५

क्रियात्मक

* त्रिताल :- त्रिताल में पारम्परिक शैलीगत नृत्य करने की क्षमता जिसमें निम्नलिखित कृतियों को समाविष्ट करना जरुरी ।

१. ठाट	- ३ मुखडे
२. आमाद	- १
३. परनजुडी आमाद	- १
४. चौपल्ली	- १
५. तिश्र / मिश्रजाति तोडा / परन	- १
६. कमाली परन	- १
७. फरमाईशी परन	- १
८. नवहक्का	- १
९. परमेलु चक्रदार	- १
१०. मिश्रजाति का तोडा	- १
११. खंड जाति का तोडा	- १
१२. तिश्र जाति का तोडा	- १
१३. चक्रदार तिहाई	- १
१४. यति पर आधारित कोइ भी रचना	- २
१५. बेदम तिहाई	- १
१६. कवित / कविता तोडा	- २

१७. पल्टे / लडी ६ प्रकार के तिहाई सहित
१८. उपज : परीक्षक द्वारा दिया गया परन पर आधारित शब्द

* पंचमसवारी, मततताल एवं शिखर तालमें विशेष तैयारी

* अभिनय पक्ष :-

१. कृष्ण वंदना / शिव वंदना / गणेश वंदना / दुर्गा वंदना (किसी भी एक पर)
२. नायक भेंदो में किसी एक पर गतभाव / पद पर भाव प्रदर्शन
३. अष्टपदी / चतुरंग
४. ठुमरी
५. परीक्षक द्वारा दिये गये नवरस में से कोई भी एक पर भाव प्रदर्शन ।

नोट : १. अभिनय द्वारा प्रस्तुत रचना के शब्दार्थ तथा भावार्थ एवं राग, ताल की जानकारी आवश्यक है ।
साथ ही हस्त मुद्राएँ, रसभाव, नायक / नायिका भेद की जानकारी द्रष्टिभेद, ग्रीवाभेद.
२. तबले एवं हार्मोनियम संगत जरुरी है ।

लिखित शास्त्र

१. कथक नृत्य विषय में सम्पूर्ण चर्चा जिसमें उत्पत्ति इतिहास (उतार - चढाव), घराना, विकास, तीनो घरानों के २ - २ गुरुओं की जानकारी तथा वर्तमान परिस्थिति का समावेश ।
२. नर्तक / नर्तकी के गुण - दोष ।
३. दशावतार में मत्स्य, वराह, कूर्म तथा नरसिंह अवतार की कथा तथा उनकी मुद्राएँ ।
४. संगीत रत्नाकर ग्रंथ का संक्षिप्त परिचय एवं नृत्य विषयक जानकारी ।
५. रामायण और महाभारत में नृत्य संबंधित चर्चा ।
६. नवरस के साथ-साथ वात्सल्य रस तथा भक्ति रस के विषय में जानकारी तथा भाव के साथ रस का संबंध / भरत का रस सूत्र तथा उसके घटकों (स्थायी भाव, विभाव, अनुभाव, संचारीभाव, सात्विकभाव)
७. त्रिताल, पंचमसवारी, शिखरताल की मात्रा ठेके तथा तत्कार के बोलों को ठाठ, चौगुन में लिपिबद्ध करना तथा पारंपारिक रचनाओंको लिपिबद्ध करना ।
८. भारतीय रंगमंच का स्वरुप और परम्परा (भरत वर्णित नाटयशालाएँ, नाटय मंडप के प्राचीन लेख, रंगमंडप का विकास ।